'मेष लग्न'

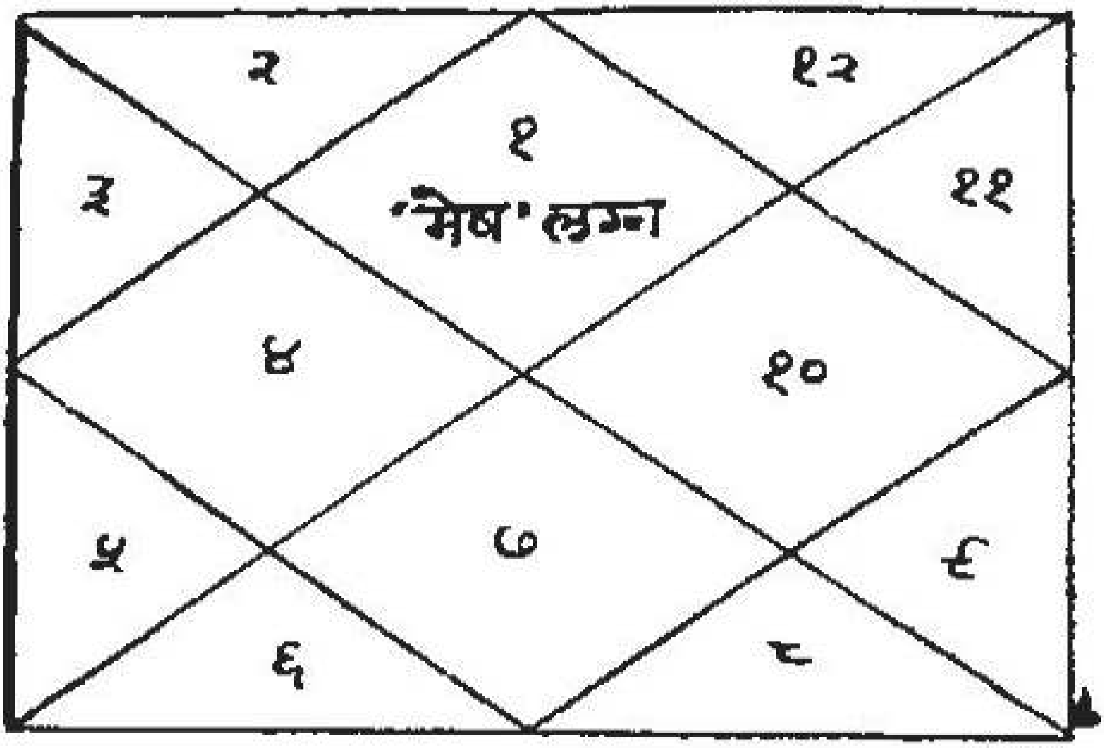

११५

['मेष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मेष' लग्न का फलादेश

'मेष' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर इकहरा तथा कुछ लालिमा लिए गौर वर्ण का होता है। वह स्वभाव से रजोगुणी, पित्त प्रकृति वाला, उग्र, अहंकारी, चंचल, अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान, धर्मात्मा, उदार, कुल-दीपक तथा अल्प-संततिवान् होता है। स्त्रियों के प्रति उसका स्वार्थपूर्ण अल्प लगाव अथवा द्वेष होता है।

इस लग्न वाले जातक को अपनी आयु के ६, ८, १५, २१, ३६, ४४, ५६ तथा ६३वें वर्ष में धन-हानि एवं शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। आयु के १६, २०, २८, ३४, ४१, ४८ तथा ५१वें वर्ष में उसे धन, वाहन, सौभाग्य आदि का सुख प्राप्त होता है।

'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ से २२३ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मेष' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली-संख्या ११६ से १२७ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११६

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११७

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११८

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११९

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२०

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२१

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२२

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२४

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२५

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२६

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२७

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८ से १३९ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२८

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२९

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३०

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३१

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३२

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३९

'मेष' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४० से १५१ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १४०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १५०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १५१

'मेष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५२ से १६२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १५२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १५३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १५४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १५५
(ङ) 'सिंह' राशि पर-हो तो संख्या १५६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १५७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १५८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १५९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १६०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १६१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १६२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १६३

'मेष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६४ से १७५ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १६४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १६५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १६६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १६७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १६८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १६९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १७०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १७१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १७२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १७३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १७४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १७५

'मेष' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७६ से १८७ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १७६

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १७७

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १७८

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १७९

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १८०

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १८१

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १८२

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १८३

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १८४

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १८५

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १८६

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १८७

'मेष' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८८ से १९९ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १८८

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १८९

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १९०

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १९१

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १९२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १९३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १९४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १९५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १९६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १९७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १९८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १९९

'मेष' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०० से २११ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २००
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २०१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २०२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २०३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २०४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २०५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २०६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २०७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २०८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २०९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २१०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २११

'मेष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २१२ से २२३ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली से विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २१२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २१३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २१४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २१५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २१६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २१७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २१८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २१९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २२०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २२१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २२२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २२३

'मेष' लग्न में 'सूर्य'

'मेष' लग्न वाली कुण्डली से 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

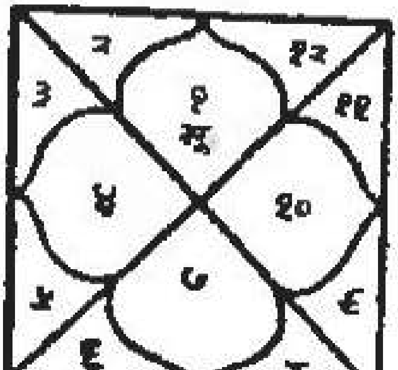

२२६

पहले भाव में अपने मित्र मंगल की राशि में उच्चस्थ सूर्य अपने मित्र मंगल की राशि पर है, अतः जातक तेजस्वी, विद्वान्, साहसी, स्वस्थ, स्वाभिमानी तथा पराक्रमी होगा। महत्वाकांक्षा, व्यवहार-कुशलता, धैर्य आदि सद्गुण प्राप्त होंगे तथा सन्तानें भी अधिक होंगी।

परन्तु सूर्य की सप्तमभाव पर नीच-दृष्टि पड़ने के कारण जातक से दाम्पत्य-सुख में कमी रहेगी। पत्नी (यदि स्त्री की जन्मकुण्डली हो तो पति) अधिक सुन्दर नहीं होगी। पति-पत्नी में मन-मुटाव भी रह सकता है। दैनिक जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

'मेष' लग्न की कुण्डली से 'द्वितीयभाव' 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीय भाव : सूर्य

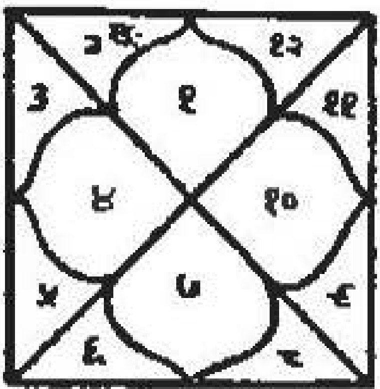

११७

दूसरे भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना होगा। इस कुण्डली में सूर्य पंचमभाव का स्वामी होकर शत्रु की राशि पर बैठा है, अतः जातक के विद्याध्ययन एवं संतान पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी। कुटुम्ब, रत्न तथा बन्धन-विषयक विवाद भी उठते रहेंगे। यहाँ से सूर्य अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, अतः जातक की आयु दीर्घ होगी तथा उसे गुदा अथवा आकस्मिक धन का लाभ भी होगा।

'मेष' लग्न कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित सूर्य का फलादेश

मेषलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

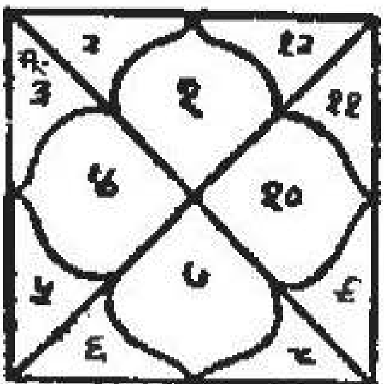

११८

तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के बुद्धिबल एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। सूर्य की सातवीं दृष्टि भाग्य-भवन पर होने से जातक भाग्यवान्, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थसेवी होगा। नवें भाव में सूर्य के मित्र तथा शुभग्रह गुरु की राशि होने से कारण जातक शुभ कार्य करने वाला तथा भगवद् भक्त होगा।

तृतीय भाव से भाई तथा वाणी का तो विचार किया जाता है, अतः यह जातक भाइयों का सुख प्राप्त करेगा तथा ओजस्वी वाणी वाला होगा।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेषलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

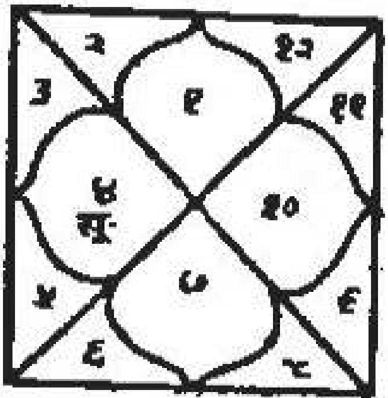

११९

चौथे भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक भूमि, गृह, वाहन आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करेगा। वह विद्वान् तथा विद्या द्वारा सुख प्राप्त करने वाला भी होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव को देखता है अतः जातक की अपने पिता से अनबन रहेगी तथा राजकीय मामलों में विफलताएँ आयेंगी। परंतु सूर्य से प्रभाव से कुछ-न-कुछ सम्मान अवश्य बना रहेगा।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : सूर्य

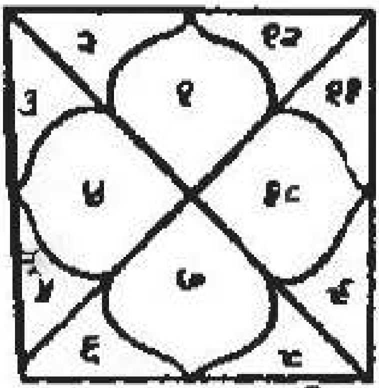

१२०

पाँचवें भाव में स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान्, यशस्वी तथा सन्तान-सुख से परिपूर्ण रहेगा। यहाँ से सूर्य को सप्तम दृष्टि अपने शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव पर पड़ती है, अतः आय के साधनों में रुकावटें आती रहेंगी तथा आर्थिक लाभ के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।

इस ग्रह स्थिति का जातक कटुभाषी तथा अहंकारी होता है, जिसके कारण लोग परोक्ष में उसकी निन्दा भी करते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर निरन्तर विजय प्राप्त करता रहेगा। पंचमभाव का स्वामी षष्ठभाव में होने के कारण विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ तो आयेंगी, परन्तु जातक परम विद्वान् तथा बुद्धिमान भी होगा। सूर्य की सप्तदृष्टि व्ययस्थान में पड़ने के कारण जातक बाहरी संबंधों से लाभ एवं सफलता पाने वाला, विदेशों में सम्मानित तथा अधिक खर्च करने वाला भी होगा। इसे सन्तानपक्ष से कुछ चिन्ताएँ अवश्य बनी रहेंगी। शत्रुपक्ष कठिनाइयाँ खड़ी करता रहेगा, परन्तु वह हारेगा तो।

मेष लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

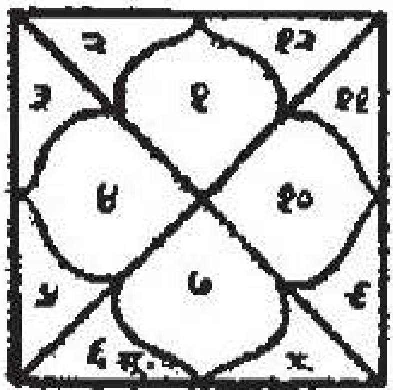

१२१

'मेष' लग्न कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

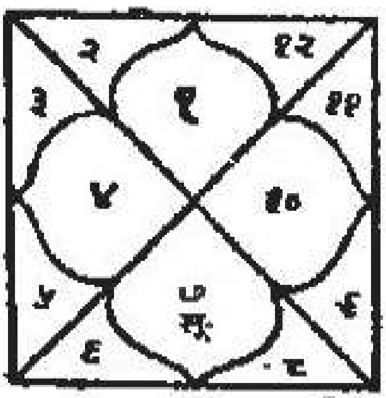

१२२

सातवें भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने स्वास्थ्य एवं स्त्री के विषय में निरन्तर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। सप्तम उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले लग्नभाव को देखने के कारण जातक संबे कद का तेजस्वी तथा स्वाभिमानी होगा। वह युक्ति एवं बुद्धिबल से अपना काम निकालने में प्रवीण होगा। सूर्य के पंचमेश होने के कारण जातक का विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी कमजोर रहेगा तथा जीवन-यापन के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

'मेष' लग्न कुण्डली से 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

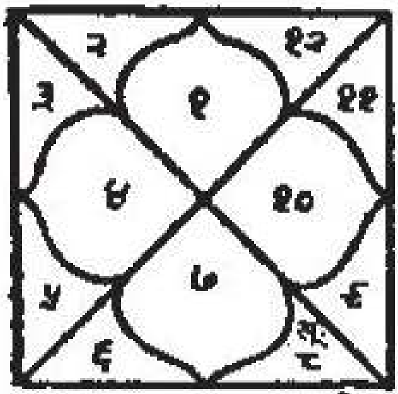

१२३

आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व एवं गुप्त धन सम्बन्धी लाभ तो होगा परन्तु आठवां घर मृत्यु-भवन होने से विद्या एवं संतान पक्ष में कमजोरी रहेगी। दैनिक जीवन में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी। सातवीं दृष्टि से शत्रु के द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन एवं कुटुम्ब विषयक असन्तोष भी निरन्तर बना रहेगा। कुल मिलकर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : सूर्य

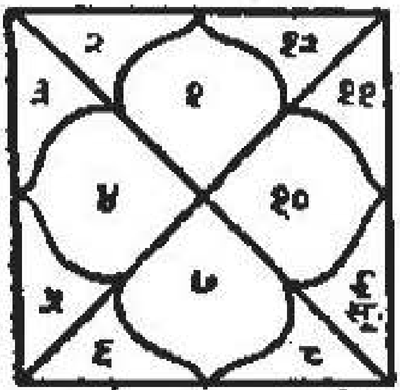

१२४

नवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक श्रेष्ठ विद्या, बुद्धि एवं ज्ञान का स्वामी होगा। यह धर्म, धर्मज्ञ शास्त्रों का ज्ञाता, ईश्वर भक्त, यशस्वी, भाग्यवान, दयालु, दानी तथा तीर्थसेवी भी होगा। भाग्योन्नति के क्षेत्र में निरन्तर, सफलताएँ मिलती रहेंगी।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की राशि वाले तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम, भाई-बहन, साहस तथा योग्यताओं में वृद्धि होगी। सूर्य की यह स्थिति बहुत श्रेष्ठ है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : सूर्य

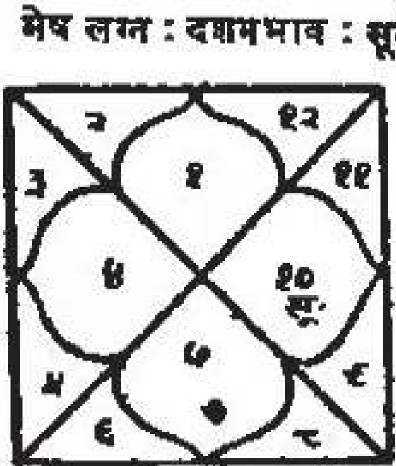

१२५

दसवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यवसाय, राज्य नौकरी तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमियों शिकार होना पड़ता है, परन्तु यह विदेशी भाषा एवं का राजभाषा का श्रेष्ठ जानकार होता है।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र चन्द्रमा की राशि से चौथे भाव को देखने से माता, भूमि, भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : सूर्य

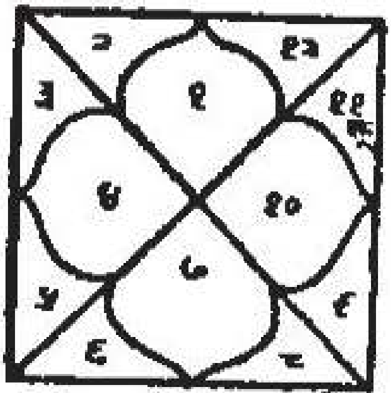

१२६

ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु शनि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थ-लाभ के लिए विशेष परिश्रम तो करना पड़ता है, परन्तु लाभ भी अत्यधिक होता है। ग्यारहवें भाव में पापग्रह शक्तिशाली माना जाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले पंचभाव से देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान का भी विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए कटुभाषी भी होता है तथा उसी से लाभ भी उठाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

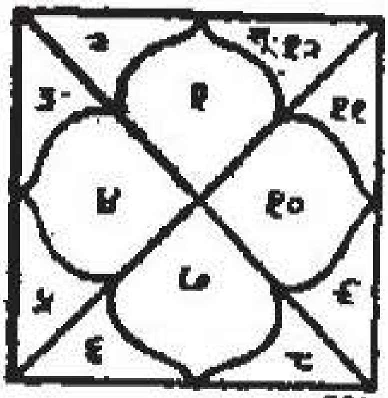

१२७

बारहवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध होता है, परन्तु व्यय की अधिकता भी बनी रहती है। उसे अपना खर्च चलाने के लिए बुद्धिबल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है। सन्तान एवं विद्या पक्ष की हानि तथा चिन्ता के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की राशि वाले षष्ठभाव को देखने के कारण जातक को शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है, परन्तु वह मानसिक चिंताओं का शिकार भी बना रहता है।

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

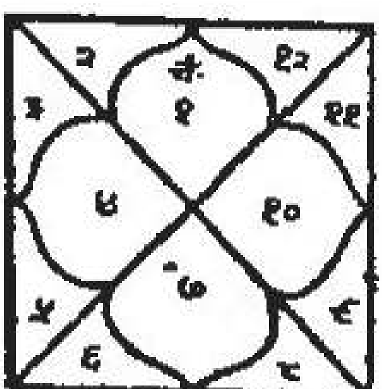

१२८

पहले भाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक मानसिक तथा पारिवारिक सुख-शांति प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखी तथा शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

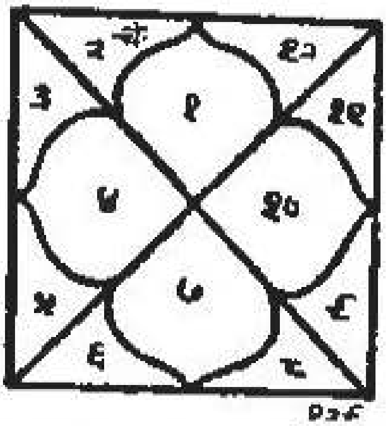

दूसरे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी यथेष्ट मिलता है, परन्तु माता के पक्ष में स्थित त्रुटि का अनुभव भी होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले आठवें भाव को देखने के कारण जातक को आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व विषयक त्रुटियों का सामना करना पड़ता है। उसका दैनिक जीवन भी कुछ अशांतिपूर्ण बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

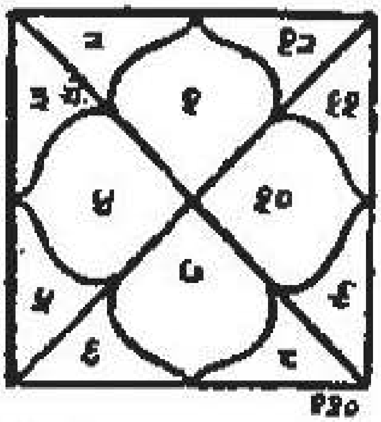

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख मिलता है। चौथे घर का स्वामी होने के कारण चन्द्रमा जातक को भूमि, भवन, वाहन आदि का सुख भी देता है।

सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि से नवें भाव को देखने के कारण जातक धर्मात्मा, उदार, दानी, विद्वान्, भाग्यवान तथा यशस्वी भी होता है। कुल मिला कर इस ग्रह स्थिति वाला जातक जीवन में अनेक प्रकार की सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

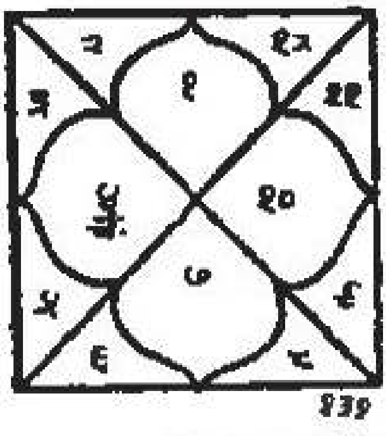

चौथे भाव में स्वराशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा मनोरंजन के साधन निरंतर उपलब्ध होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव को देखने के कारण जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं सम्मान के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। कुल मिला कर—ऐसा जातक सब प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी यशस्वी सम्मानित नहीं हो पाता।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

पाँचवें भाव में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान एवं सन्ततिवान होता है।

मेष लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

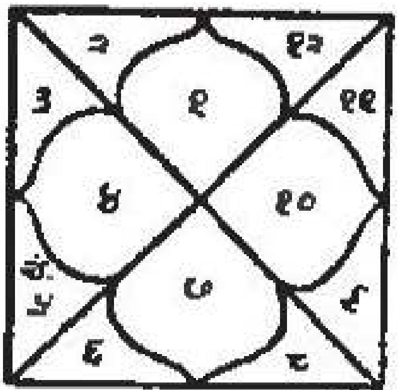

१३५

सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण उसे आय के साधनों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उन्हें वह अपने धैर्य एवं शांत स्वभाव से सहन कर लेता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति का व्यक्ति धीर, गंभीर, शांत, योग्य, विद्वान्, सन्तोषी, माता से सुखी, भू-सम्पत्ति का स्वामी, परन्तु व्यवसाय एवं लाभ के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठाने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में शांति का अनुभव करता है तथा विपत्तियों पर अपने धैर्य एवं विनम्रता के बल पर विजय प्राप्त करता है। उसके घरेलू वातावरण में भी अशांति एवं कमियाँ बनी रहती हैं।

मेष लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

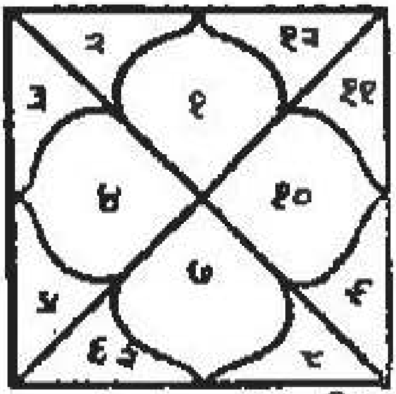

१३३

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की राशि वाले बारहवें भाव को देखने के कारण जातक शुभ कार्यों में व्यय करता है तथा बाहरी स्थानों में लाभ एवं सुख भी प्राप्त करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विनम्र, धैर्यवान, शुभकर्म करने वाला तथा घरेलू जीवन में त्रुटियों का शिकार बना रहने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सातवें भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक स्त्री-सुख एवं भोग-विलास को प्राप्त करने वाला, सुन्दर, एवं भूमि तथा सम्पत्ति का सुख पाने वाला होता है।

मेष लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

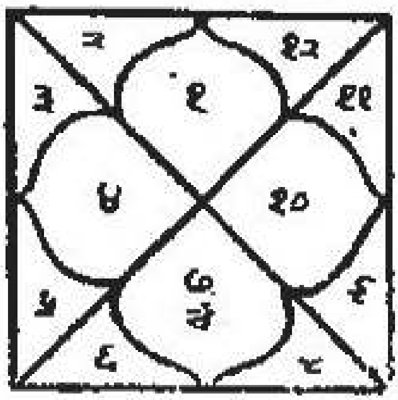

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल की राशि वाले पहले भाव को देखने के कारण जातक शारीरिक, सौन्दर्य, सम्मान, मनोरंजन, सुख आदि को प्राप्त करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुन्दर, विलासी, यशस्वी तथा व्यावसायिक एवं सुख के क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

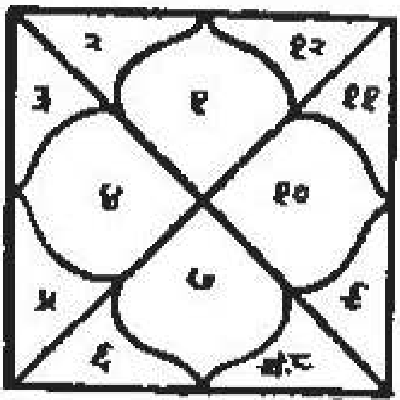

१३४

आठवें भाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा अचल सम्पत्ति के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। उसे पुरातत्त्व तथा आयु संबंधी संकट भी उठाने पड़ते हैं तथा घरेलू-सुखशान्ति में भी कमी रहती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की राशि वाले द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन प्राप्ति के योग निरन्तर मिलते रहते हैं तथा वह धन एवं सुख को अर्जित करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील भी बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : चन्द्र

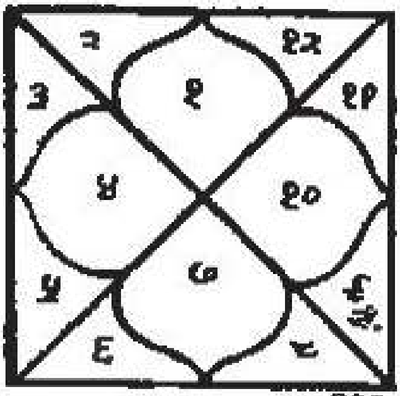

१३६

नवेंभाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्म-कर्म, दान, पुण्य, तीर्थ-यात्रा आदि की ओर अधिक आकर्षित रहता है। उसे माता, भूमि तथा सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र बुध की राशि वाले तृतीयभाव को देखता है। अतः जातक के भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में भी वृद्धि बनी रहेगी। कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति का जातक सौभाग्यशाली, धन-सम्पित्तिवान, भाई-बहिनों से युक्त तथा धार्मिक आचार-विचारों वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

'मेष' लग्न : दशमभाव : चन्द्र

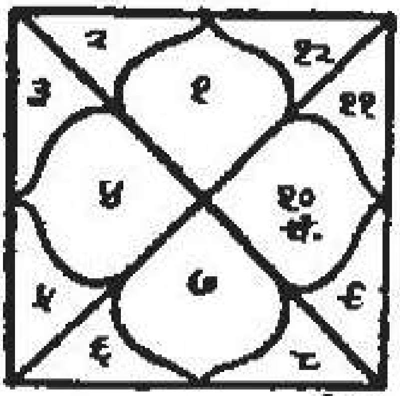

१३७

दसवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है, परन्तु उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है और वह अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय द्वारा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपनी राशि वाले चतुर्थ भाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का अच्छा सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम द्वारा अपना मकान बनवाता तथा सुख प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

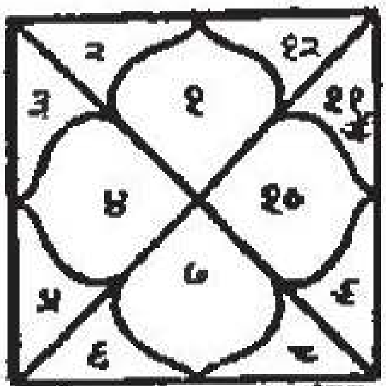

१३८

ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल के प्रभाव से अपनी आय के साधनों को बढ़ाता तथा सुखी जीवन बिताता है। सामान्यतः उसे आय के साधनों में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र की राशि वाले पंचम भाव को देखता है, अतः जातक विद्वान् बुद्धिमान् तथा सन्ततिवान् होता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति विद्या बुद्धि के द्वारा अपनी उन्नति करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

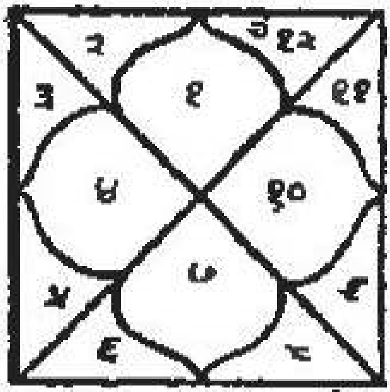

१३९

बारहवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शुभ कार्यों तथा शान-शौकत में खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र बुध की राशि वाले षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रुपक्ष पर शान्ति से विजय पायेगा तथा अपनी बुद्धिमत्ता से हर प्रकार के झगड़ों को निपटाने में सफल हुआ करेगा। कुल मिला कर ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति सुखी तथा सन्तुष्ट जीवन बिताने वाला एवं शत्रुपक्ष पर अपनी शालीनता से विजय पाने वाला होता है।

'मेष' लग्न में 'मंगल'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: प्रथमभाव: मंगल

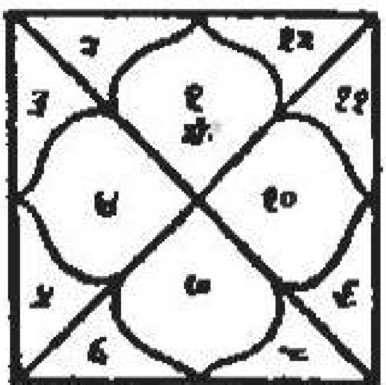

१४०

पहलेभाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पुष्ट शरीर वाला आत्म-बली तथा साहसी होता है। आठवें भाव का स्वामी होने तथा उसे पूर्ण दृष्टि के कारण मंगल जातक को कभी-कभी रोगों का शिकार भी बना देता है परन्तु आयु लम्बी देता है।

सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले सप्तम भवन को भी देखता है। अतः जातक को अपनी पत्नी तथा व्यवसाय के मामले में कुछ हानि भी उठानी पड़ती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

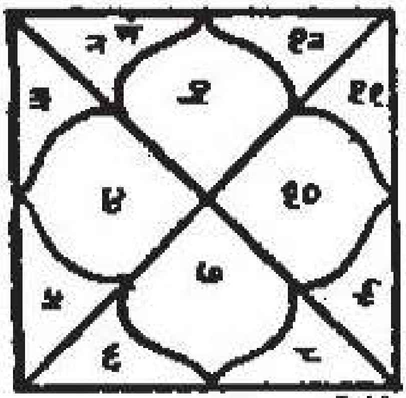

१४१

दूसरे भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कमी तथा शरीर में कष्ट का सामना करना पड़ता है। चतुर्थ दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक मित्र तथा संतान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों का सामना करता है। सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ देता है। आठवीं दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में भी रुकावटें डालता रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: तृतीयभाव: मंगल

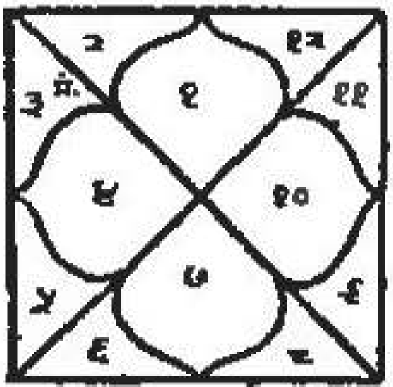

१४२

तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी तथा साहसी होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है।

चौथी दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रुजयी होता है और हिम्मत से काम लेकर उन पर अपना प्रभाव डालता है। सातवीं दृष्टि से मित्र बुध की राशि वाले नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति करता है तथा आठवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी उपस्थित करता रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

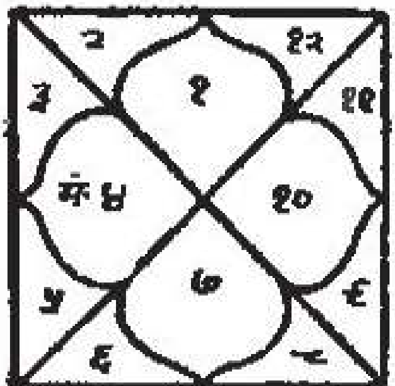

१४३

चौथे भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कमी रहती है। चौथी दृष्टि से शत्रु शुक्र की राशि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा लाभ होता है। आठवीं दृष्टि के शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण लाभ प्राप्ति के लिए जातक को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'मेष लग्न : पंचमभाव : मंगल

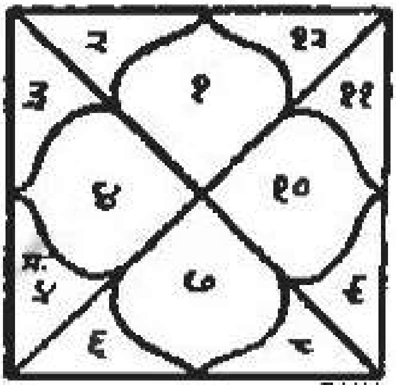

१४४

पाँचवें भाव मे मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का साथ देता है। सातवीं दृष्टि से सम-शनि की राशि के ग्यारहवें भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ के योग उपस्थित करता है तथा आठवीं दृष्टि से मित्र गुरु के बारहवें भाव को देखने के कारण खर्च अधिक कराता है तथा बाहरी स्थानों से आजीविका के सम्बन्ध बनाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : मंगल

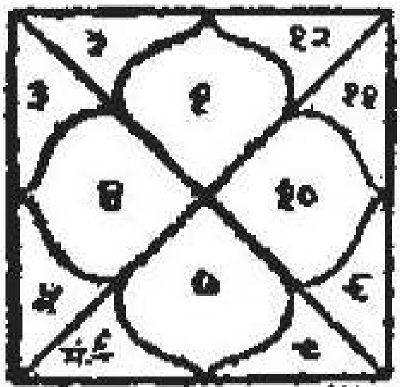

१४५

छठे भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रुजयी, साहसी तथा निर्भय होता है। चौथी दृष्टि से शनि की राशि के दसवें भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ देता है। सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि के बारहवें भाव को देखने के कारण खर्च अधिक तथा बाहरी स्थानों से लाभ कराता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शरीर से स्वस्थ, स्वाभिमानी तथा प्रबल प्रभाव वाला बनाये रखता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : मंगल

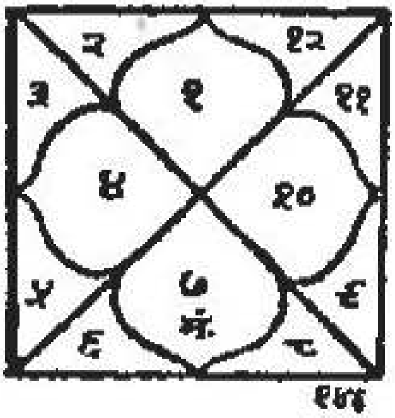

१४६

सातवें भाव मे शुक्र की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी उच्च दृष्टि से शनि की राशि के दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा उन्नति के साधन तथा यश देता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर को स्वस्थ तथा प्रभावशाली बनाता है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को धन तथा कुटुम्ब वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करने पर भी न्यून सफलता देता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : मंगल

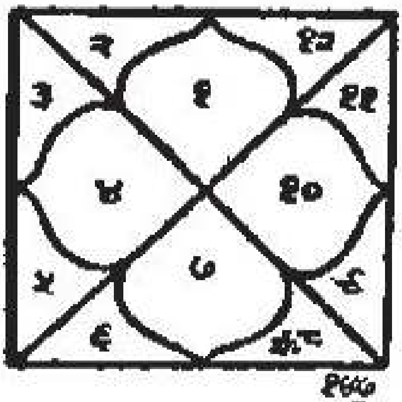

१४७

आठवें भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक दीर्घायु तथा पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त करता है, परन्तु लग्न का स्वामी भी होने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कमी देता है। चतुर्थ दृष्टि से शनि की राशि वाले एकादश भाव को देखने के कारण आय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता देता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र की राशि वाले द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि के तृतीयभाव के देखने के कारण जातक के पराक्रम को बढ़ाता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी भी लाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: नवमभाव : मंगल

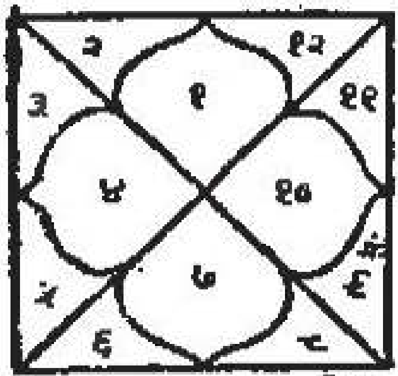

१४८

नवें भाव में मित्र राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से बारहवें भाव को देखने से खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु मंगल के अष्टमेश भी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आठवीं नीच दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण यात्रा, भूमि, भवन आदि के सुख में कमी बनी रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' में स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : मंगल

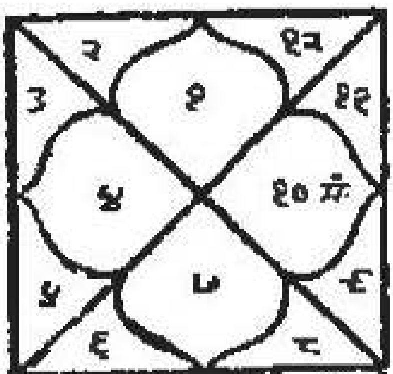

१४९

दसवें भाव में शनि की राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव के जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है, परन्तु व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति करता है। चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्री प्रथम-भाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव में उन्नति देता है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता प्राप्त होती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'मेष' लग्न : एकादशभाव : मंगल

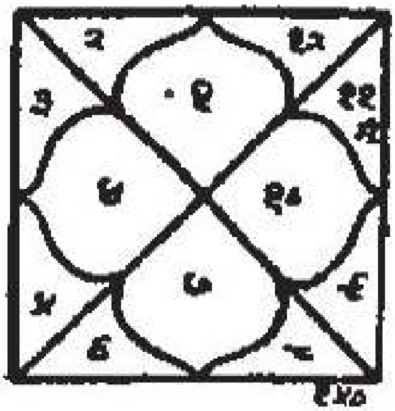

१५०

ग्यारहवें भाव में शनि को राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक की आय में वृद्धि होती रहती है, परन्तु अष्टमेश दोष होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। चौथी दृष्टि से शत्रु की राशि वाले द्वितीयभाव में देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब सम्बन्धी असन्तोष रहता है। सातवीं दृष्टि से मित्रराशि के पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर प्रभाव बढ़ता है तथा जातक बड़ा साहसी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : मंगल

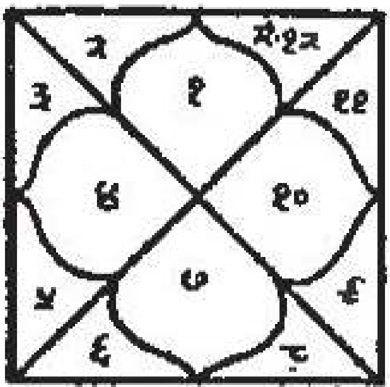

१५१

बारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों में भ्रमण करने वाला तथा अत्यधिक खर्च करने वाला होता है। उसके शारीरिक सौंदर्य में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक पराक्रमी होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आ जाती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में प्रबल रहता है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले सप्तम भाव को देखने से स्त्री-सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'मेष' लग्न में 'बुध'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : बुध

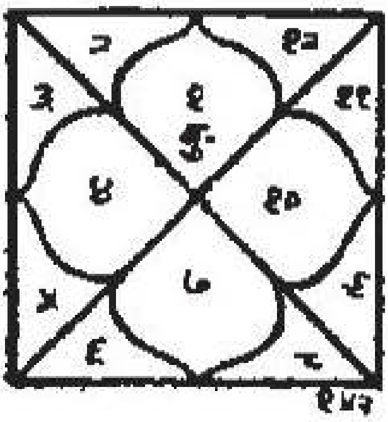

१५२

पहले भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परन्तु बुध के षष्ठेश दोष के कारण रोग-पीड़ित भी रहता है। इसी कारण भाई-बहिनों के सुख में भी कुछ कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सातवें भाव को देखने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में तो परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु स्त्री-सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : बुध

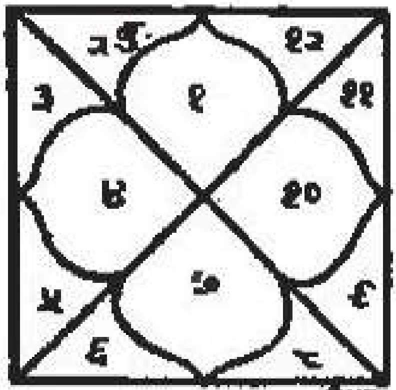

१४३

दूसरे भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक के धन एवं पुरुषार्थ में वृद्धि तो होती है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण धनप्राप्ति के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानि का सामना भी करना पड़ता है। बुध के तृतीयेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में भी कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व सम्बन्धी लाभ भी होते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : तृतीयभाव : बुध

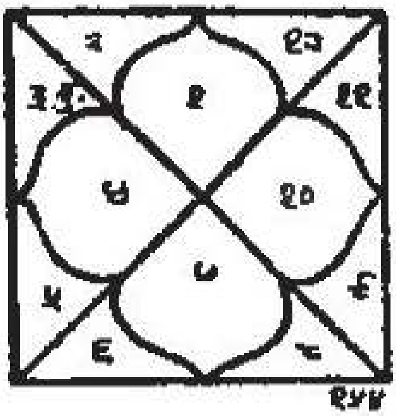

१४४

तीसरे भाव में स्वराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा हिम्मती होता है, परन्तु षष्ठेश होने के कारण जहाँ शत्रुओं पर विजय दिलाता है, वहीं भाई-बहिन के सुख में कमी भी ले आता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक अपने ही पराक्रम से भाग्य की वृद्धि करता है तथा कुछ कमी के साथ धर्म-पालन की ओर भी प्रेरित करता रहेगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विवेकी, परिश्रमी तथा पराक्रमी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : चतुर्थभाव : बुध

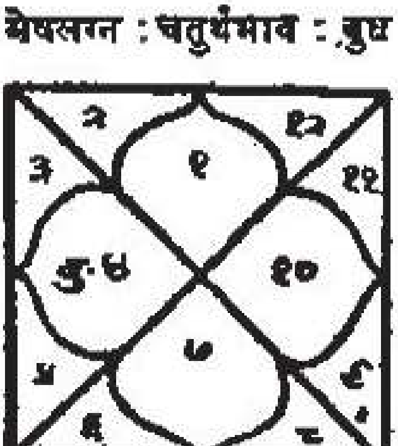

१४५

चौथेभाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख के पक्ष में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक को पिता एवं राज्य पक्ष द्वारा सम्मान तथा सफलतायें मिलती हैं। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक यशस्वी होता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : पंचमभाव : बुध

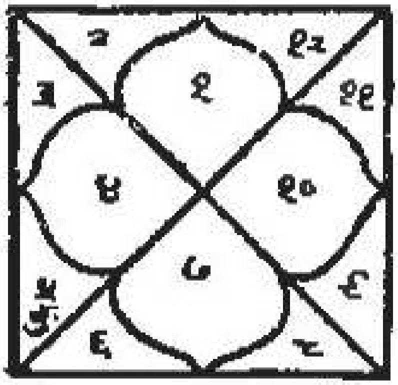

१५६

पाँचवें भाव में मित्रराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अपने विशेष परिश्रम द्वारा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, क्योंकि बुध में स्थानाधिपति दोष है।

सातवीं मित्रदृष्टि से ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-विवेक द्वारा भाग्य तथा आय की वृद्धि करता है। बुध के षष्ठेश होने के कारण जातक को शत्रुपक्ष में भी सफलता मिलती रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : बुध

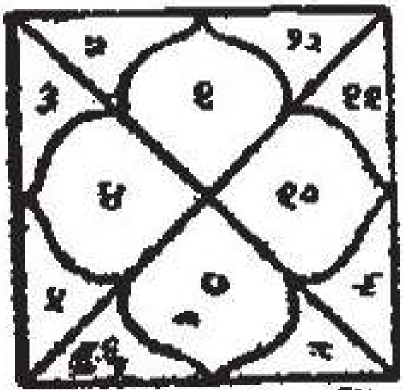

१५७

छठे भाव में स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़े-बड़े काम कर दिखाने वाला होता है।

बुध के पराक्रमेश के साथ षष्ठेश भी होने के कारण भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है तथा अपने पराक्रम के बारे में भी कुछ आन्तरिक कमी का अनुभव करता रहता है।

सातवीं नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : सप्तमभाव : बुध

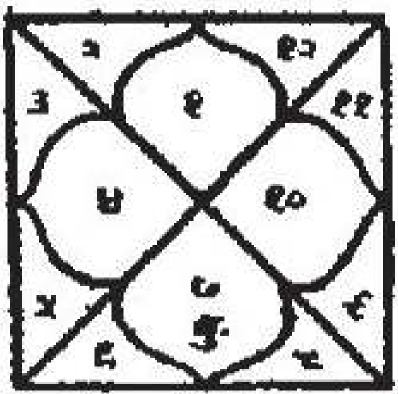

१५८

सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय में सफलता पाता है, परन्तु षष्ठेश होने के कारण स्त्री-पक्ष में कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को सामान्य शारीरिक कष्ट तथा रोगों का शिकार भी बनाता है। भाई-बहिन के द्वारा जातक को सहयोग मिलता रहता है तथा विवेक-बुद्धि भी प्रबल रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : बुध

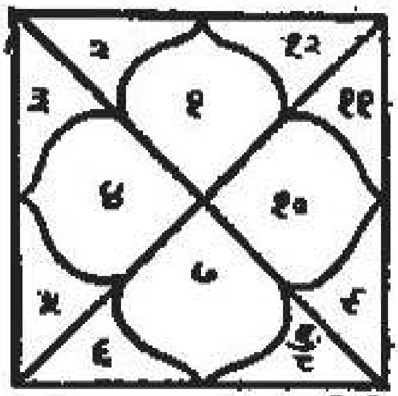

२५६

आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि में स्थित तृतीयेश एवं षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को पराक्रम, आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रुपक्ष से हानि पहुँचने की संभावना भी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से बुध द्वितीयभाव से देखता है, अतः जातक को धन उपार्जित करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति के जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : बुध

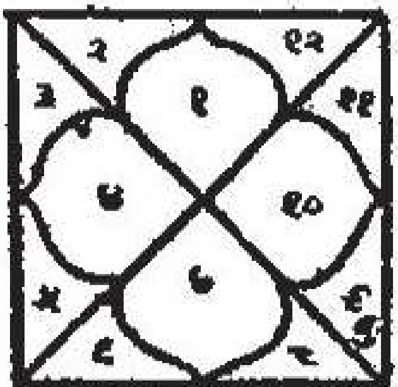

२६०

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के कारण जातक को भाग्य-पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है, परन्तु शत्रुपक्ष के सम्बन्ध से भाग्यवृद्धि में सफलता भी मिलती है।

सातवीं दृष्टि से बुध स्वराशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और उसे स्व-विवेक तथा भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ परेशानियों के साथ ही उन्नति कर पाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : दशमभाव : बुध

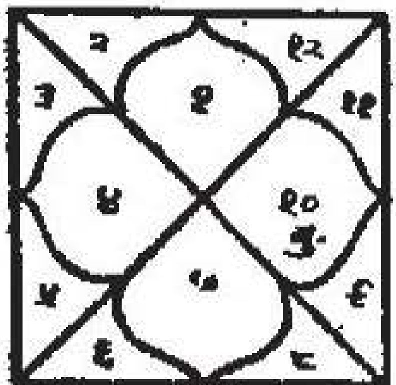

२६१

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम तथा पुरुषार्थ द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण पिता से कुछ वैमनस्य भी रहता है। राज्यपक्ष में सम्मान तथा शत्रुपक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से बुध चन्द्रमा की राशि के चौथे भाव को देखता है, अतः माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी सा देता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : बुध

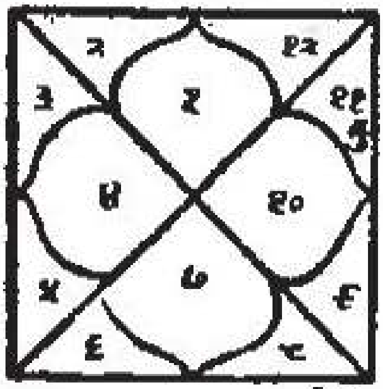

१६२

ग्यारहवें भाव में मित्र राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम एवं बुद्धि-विवेक द्वारा आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन का लाभ भी मिलता है, परन्तु षष्ठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि में पंचमभाव को देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में सफलता देता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान पक्ष में भी सुख दिलाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : गुरु

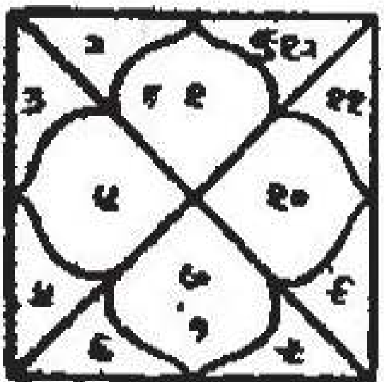

१६३

बारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के विषय में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं भाई-बहिन के सुख में भी न्यूनता आती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से बुध अपनी राशि वाले षष्ठभाव को देखता है अतः जातक स्व-विवेक द्वारा शत्रुपक्ष पर सफलता पाने में समर्थ होता है तथा गुप्त युक्तियों एवं धैर्य से काम लेने वाला भी होता है।

'मेष' लग्न में 'गुरु'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : गुरु

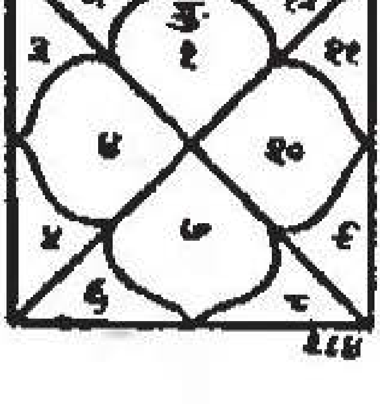

१६४

पहले भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक यश, उन्नति एवं बाह्य-स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु पंचमभाव को देखता है तथा जातक शत्रु विद्वान्, बुद्धिमान तथा सन्ततिवान होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयां आती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य एवं धर्म में वृद्धि होती है।

'मेष' की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

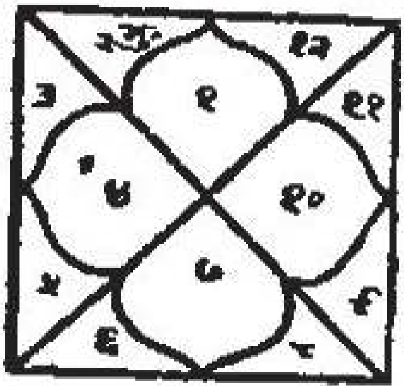

१६५

दूसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक वाह्य-स्थानों के सम्पर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है। नवीं दृष्टि से शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : गुरु

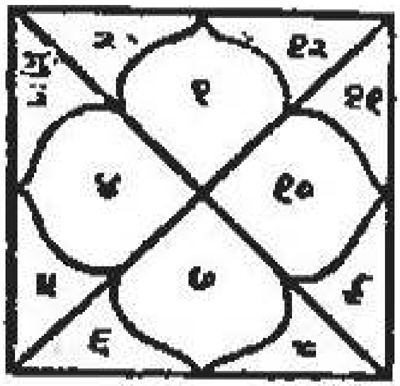

१६६

तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि-से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से स्व-राशि वाले नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

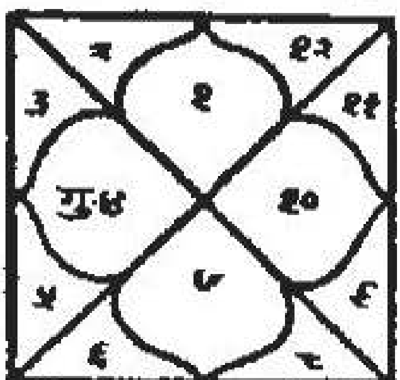

१६७

चौथे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीच दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य सुख में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध रहता है, परन्तु व्यय की अधिकता रहती है। ऐसा जातक धनी, सम्पत्तिवान, दीर्घायु तथा खर्चीला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : गुरु

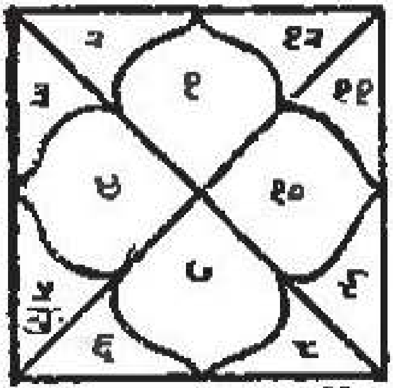

१६८

पाँचवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान्, बुद्धिमान तथा मस्तिष्कवान होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवें भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी के क्षेत्र में कभी-कभी कठिनाइयां आती रहती हैं। नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ बना रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धर्मात्मा तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : गुरु

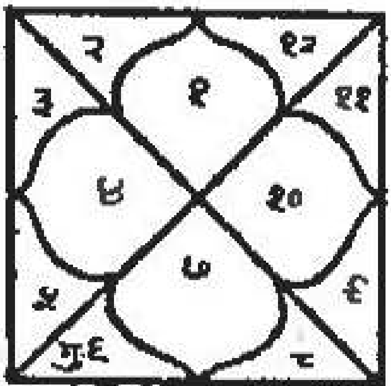

१६९

छठे भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है तथा कुछ रुकावटों के साथ भाग्योन्नति भी होती है। पाँचवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-सम्बन्ध में कमी आती है। सातवीं दृष्टि से द्वादश-भाव को स्वराशि में देखने के कारण व्यय की अधिकता रहती है तथा बाहरी सबंधों से सफलता मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण कुटुम्ब से मतभेद रहता है तथा धन-प्राप्ति में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : गुरु

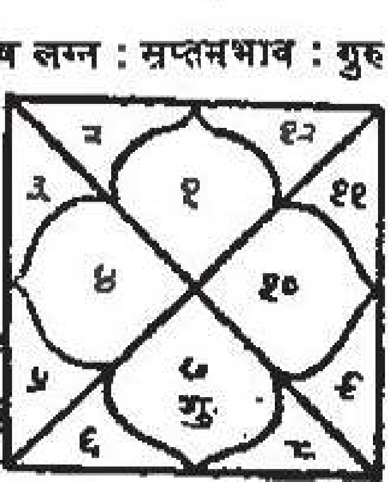

१७०

सातवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन तथा पराक्रम का पक्ष अच्छा बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : गुरु

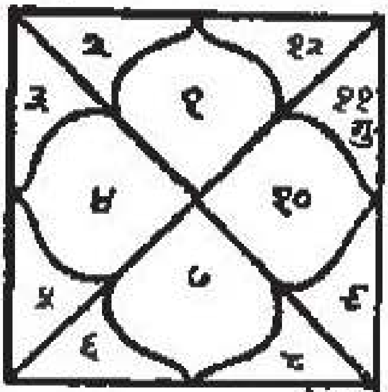

१०४

ग्यारहवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित भाग्येश गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति में कुछ कमी बनी रहती है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु तृतीयभाव को देखता है, परन्तु व्ययेश होने के कारण भाई तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी त्रुटिपूर्ण सफलता देता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान पक्ष का सहयोग मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता मिलती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : गुरु

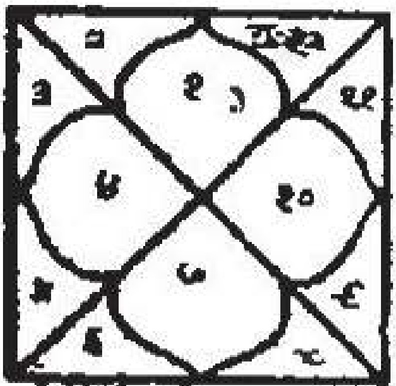

१०५

बारहवें भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्थानों से लाभ भी होता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु चतुर्थ-भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में जातक अपनी समझदारी से सफलता प्राप्त करता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक के आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। ऐसी स्थिति का जातक हरक्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता पाता है।

'मेष' लग्न में 'शुक्र'

'मेष'-लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

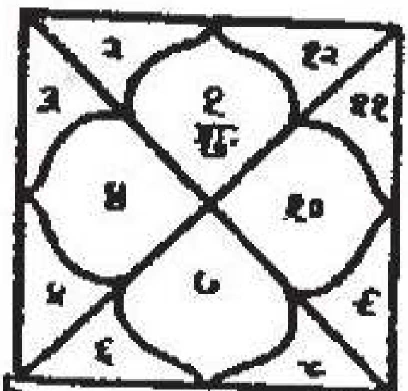

१०६

पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक सुन्दर शरीर वाला, सम्मानित, बलिष्ठ तथा चतुर होता है।

सातवीं दृष्टि से शुक्र स्वराशि वाले सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में की सफलताएँ मिलती हैं परन्तु शुक्र के धनेश होने के कारण व्यवसाय तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

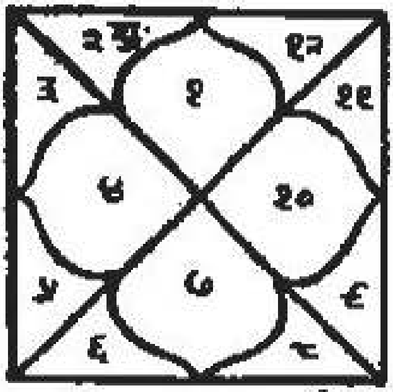

१०७

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक धनी, कुटुम्बवान तथा सौभाग्यशाली होता है, परन्तु शुक्र के बन्धनेश के साथ सप्तमेश भी होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को स्वयोग्यता के कारण ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

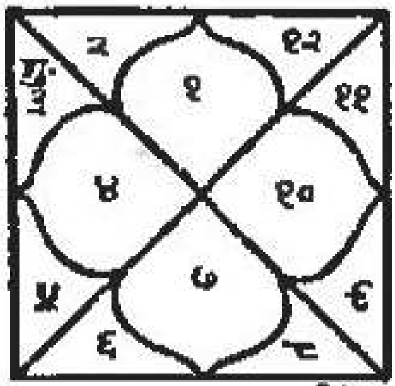

१०८

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम, चातुर्य, साहस एवं भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, परन्तु सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं समदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक भाग्यवान तथा धर्मात्मा भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक, पराक्रमी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

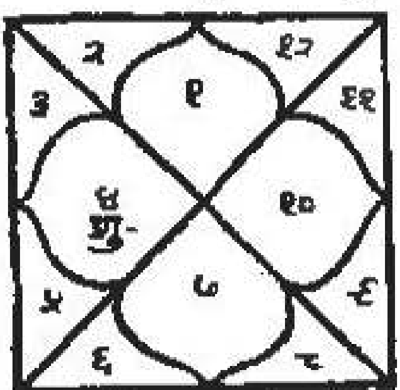

१०९

चौथेभाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है, परन्तु शुक्र के द्वितीयेश तथा केन्द्रस्थ होने के कारण धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता रहता है। इसी प्रकार स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को राज्य तथा पिता के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्रमें भी उन्नति होती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : शुक्र

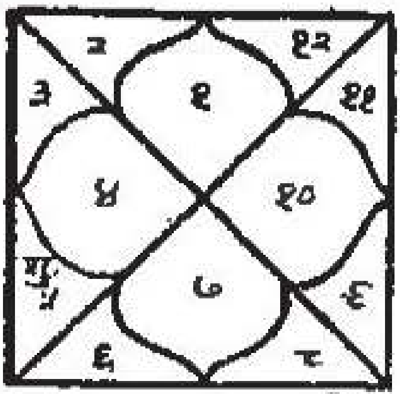

१८०

पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि में त्रिकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक की आमदनी अच्छी बनी रहती है। संक्षेप में इस ग्रह स्थिति का जातक विद्वान्, मतिमान, सुखी, धनवान तथा भाग्यशाली होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

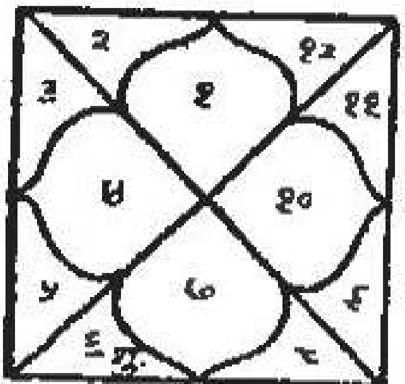

१८१

छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर नीचस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु क्षेत्र में गुप्त-चातुर्य से काम लेता है तथा कठिनाइयों का शिकार बनता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के खर्च में अधिकता बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सफलता मिलती है। ऐसी ग्रह स्थिति से जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा सफलता पाने के लिए बुद्धि-बल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

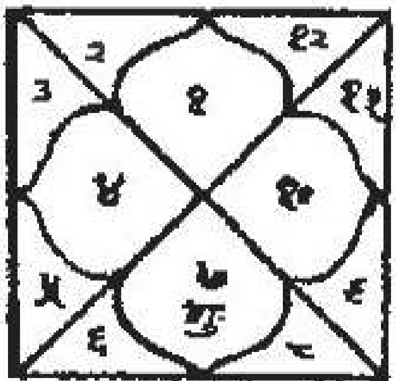

१८२

सातवें भाव में केन्द्रस्थ स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक सुन्दर, कार्यकुशल, शारीरिक दृष्टि से पुष्ट तथा प्रतिष्ठित भी होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, प्रतिष्ठित, होशियार तथा स्त्री, धन कुटुम्ब आदि के सुख से भरा-पूरा रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

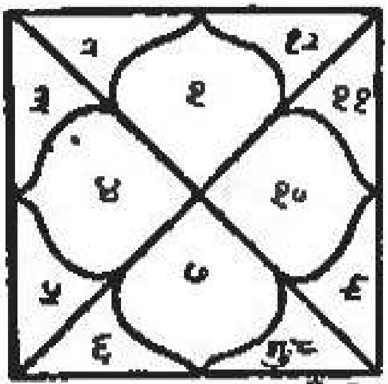

१८३

आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा सप्तमेश शत्रु के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा अपने चातुर्य द्वारा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : शुक्र

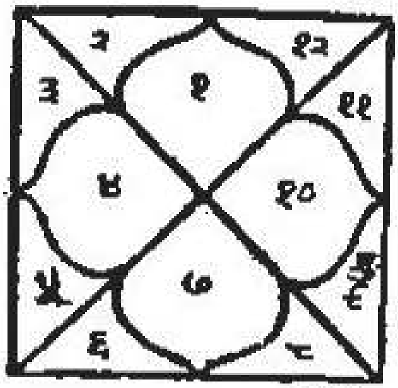

१८४

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर त्रिकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक भाग्यवान तथा चतुर होता है, साथ ही उसे स्त्री तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अच्छा सुख भी मिलता है।

संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक सुखी, धनी, भाग्यवान, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहिनों के सुख से युक्त होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : शुक्र

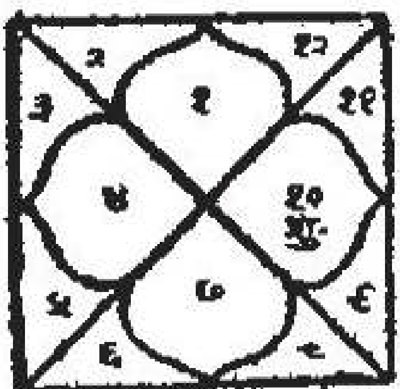

१८५

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य क्षेत्र से सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से केन्द्रस्थ शुक्र द्वारा चतुर्थभाव को देखने से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, माता, पिता तथा स्त्री के सुख को पाने वाला, यशस्वी तथा परम चतुर होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' में स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न: एकादशभाव: शुक्र

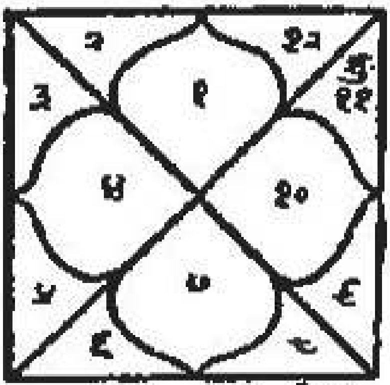

३८६

ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित षष्ठमेश तथा तृतीयेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने चातुर्य द्वारा खूब लाभ कमाता है तथा धनी होता है। उसे स्त्री एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में बड़ी चतुराई के साथ सफलता मिलती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, चतुर तथा स्वार्थी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' में स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न: द्वादशभाव: शुक्र

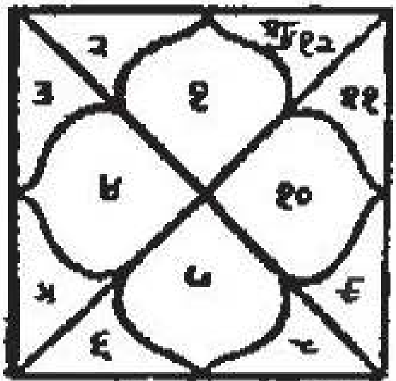

३८७

बारहवें भाव में अपने सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी सम्बन्धों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा यश प्राप्त करता है तथा बहुत खर्चीला भी होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से मित्र राशि के षष्ठ-भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में छल-छिद्र एवं भेद युक्ति से लाभ निकालता है तथा शत्रुओं द्वारा कुछ हानि भी उठाता है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति का जातक संघर्ष-पूर्ण सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मेष' लग्न में 'शनि'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : शनि

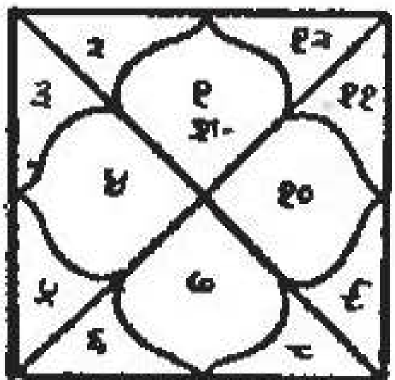

३८८

पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा मान-प्रतिष्ठा में कमी रहती है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। तीसरी मित्रदृष्टि तृतीयभाव पर पड़ने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, सातवीं मित्रदृष्टि सप्तमभाव पर पड़ने से स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में सफलता देता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा की वृद्धि भी करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : शनि

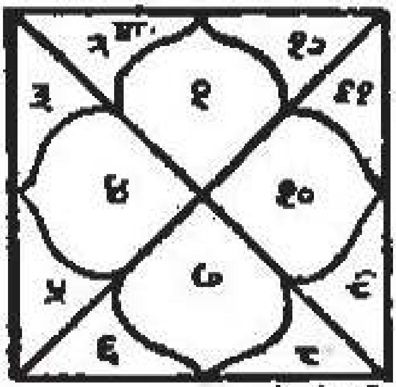

१८९

दूसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक धनी तथा कुटुम्बवान होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होने पर भी जातक को अशान्तियों का सामना करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी तथा ऐश्वर्यवान होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : शनि

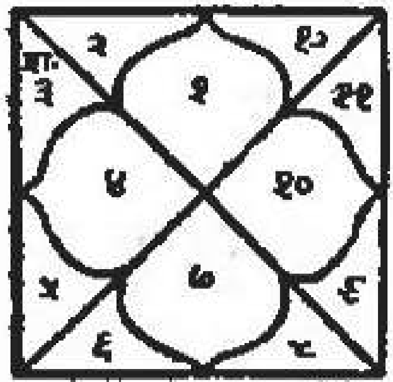

१९०

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। साथ ही पिता, राज्य द्वारा सहयोग मिलता है। तीसरी शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान पक्ष में कमी रहती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा दसवी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : शनि

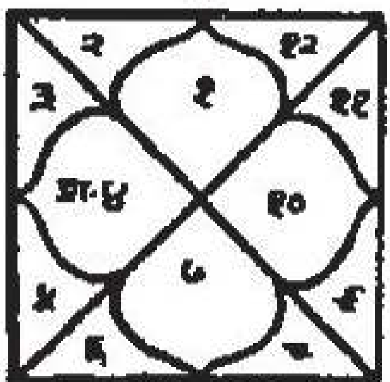

१९१

चौथेभाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन के साधनों में कुछ कमी रहती है, परन्तु सुख में वृद्धि होती है। तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है। सातवीं दृष्टि स्वराशि वाले दशमभाव में पड़ने से पिता राज्य व्यवसाय एवं सामान के क्षेत्र में वृद्धि होती रहती है। दसवीं नीचदृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा वह चिन्ताओं का भी कुछ शिकार बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न: पंचमभाव: शनि

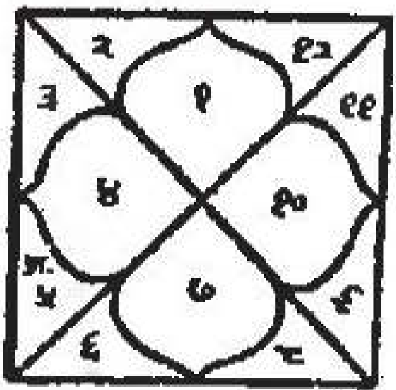

१६७

पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित त्रिकोणस्थ शनि के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान पक्ष से मतभेद रहता है। तीसरी उच्चदृष्टि से मित्रराशि के सप्तमभाव को देखने के कारण व्यवसाय एवं स्त्री पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा राज्य एवं पिता से भी लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का भी खूब लाभ होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : शनि

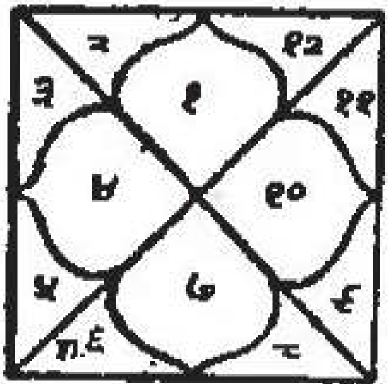

१६८

छठेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राज्य पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। परन्तु आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रुओं पर विजय भी मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कठिनाइयों से सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा प्रभावी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : शनि

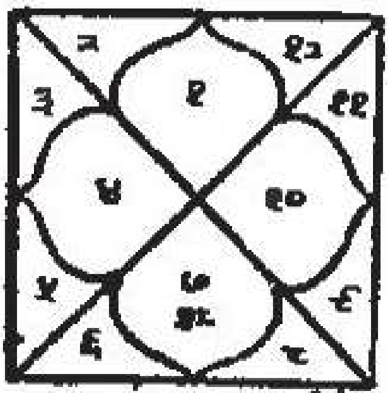

१६९

सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य से बहुत लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु मंगल की राशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है तथा घरेलू सुखों में भी कमी आती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : शनि

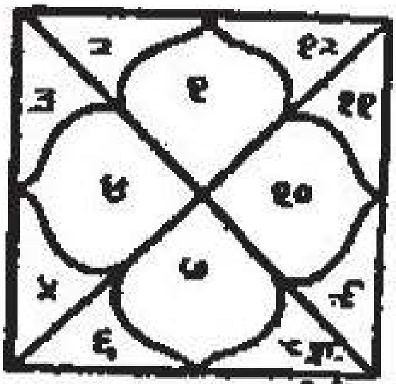

२४५

आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित एकादशेश शनि से प्रभाव से जातक को पुरातत्व एवं आयु का तो लाभ होता है, परन्तु आमदनी के क्षेत्र में कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता-पक्ष से अल्प लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान पक्ष में त्रुटि रहती है। ऐसा जातक जबान का तेज तथा क्रोधी भी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : शनि

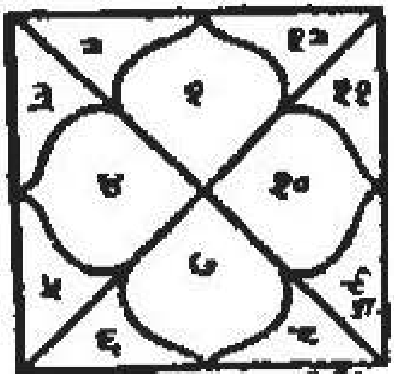

२४६

नवेंभाव में शत्रु बुध की राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की आरम्भ में कम तथा बाद में विशेष उन्नति होती है। धर्म का पालन भी कम ही होता है। पिता तथा राज्य द्वारा लाभ मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि के साथ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। संक्षेप, ऐसी ग्रह स्थिति का जातक शत्रुजयी, यशस्वी तथा धनी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित शनि का फलादेश

मेषलग्न : दशमभाव : शनि

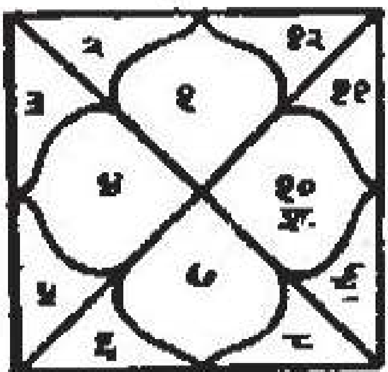

२४७

दसवेंभाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक पिता तथा राज्य द्वारा विशेष शक्ति तथा लाभ प्राप्त करता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्थानों के संबंध असंतोषजनक रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है तथा दसवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। संक्षेप में ऐसा जातक ऐश्वर्यवान्, विलासी तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : एकादशभाव : शनि

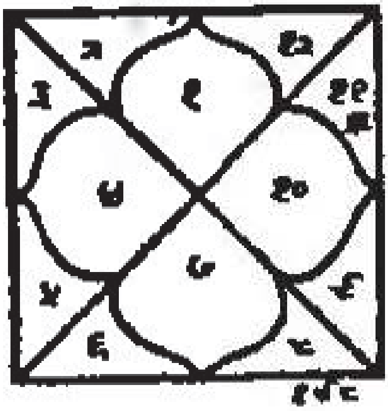

१९८

ग्यारहवें भाव में स्वराशि स्थित दशमेश शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। उसे पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से शत्रु की राशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान पक्ष में भी त्रुटि बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तो होती है, परन्तु पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है एवं दैनिक जीवन में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : शनि

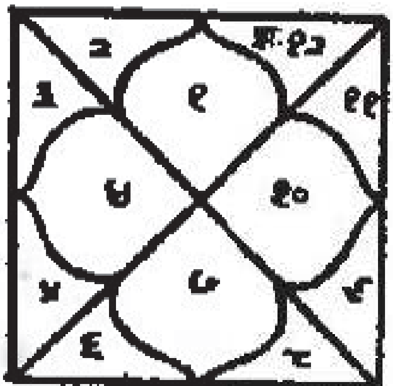

१९९

बारहवें भाव में शत्रु बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक होता है तथा बाहरी स्थानों, पिता एवं राज्य के पक्ष से भी हानि उठानी पड़ती है। तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से छठेभाव को देखने से शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं तथा विशेष परिश्रम द्वारा थोड़ी ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न में 'राहु'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : राहु

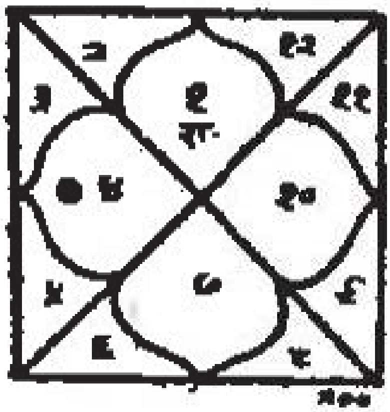

२००

पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। हृदय में विभिन्न प्रकार की चिन्तायें भी बनी रहती हैं। ऐसा जातक झूठ, फरेब तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला तथा बड़ा हिम्मती होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : द्वितीयभाव : राहु

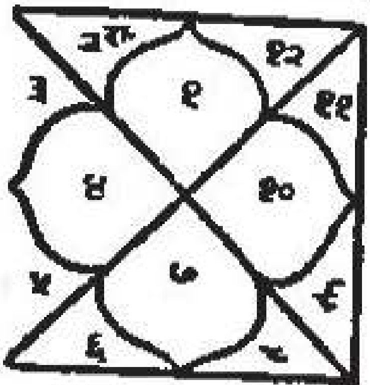

२०१

दूसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन सम्बन्धी चिन्ताओं तथा अनेक प्रकार से संकटों से ग्रस्त बना रहता है। कौटुम्बिक क्लेश भी भोगने पड़ते हैं। परन्तु बारम्बार हानि उठाकर भी जातक अन्त में अपने युक्तिबल से धनी क्षतिपूर्ति करने में समर्थ हो जाता है तथा समाज में धनी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित भी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : तृतीयभाव : राहु

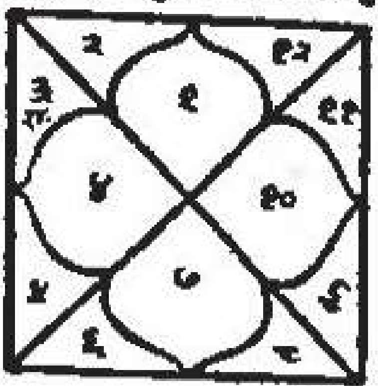

२०२

तीसरे भाव में उच्चस्थ राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, साहसी, युक्तिबल में प्रवीण तथा अपनी भीतरी कमजोरी को प्रकट न करने वाला होता है और अपने इन्हीं गुणों के कारण सफलता भी प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : चतुर्थभाव : राहु

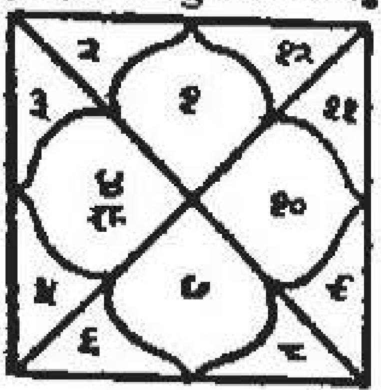

२०३

चौथेभाव में शत्रुराशिस्थ राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी का शिकार होना पड़ता है। घरेलू शान्ति भी नहीं रहती। वह मानसिक-अशान्तियों का शिकार बना रहता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर भी अधिक सफल नहीं हो पाता।

'मेष' लग्न की कुण्डली से 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : पंचमभाव : राहु

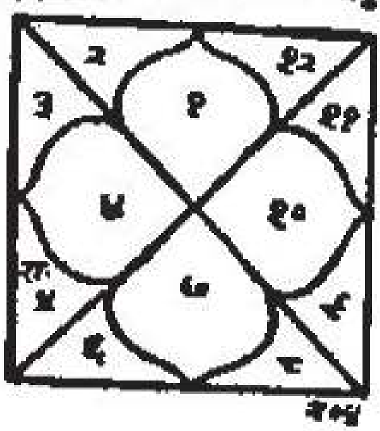

२०४

पाँचवेंभाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्या के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों के बाद भी थोड़ी ही सफलता मिल पाती है। उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट होता है। परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह सामान्य सफलतायें प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा तथा परेशानियों में फँसा रहने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : षष्ठभाव : राहु

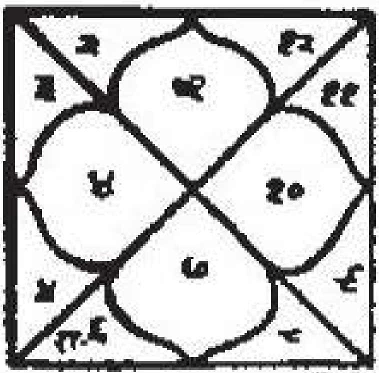

३०५

छठेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु-पक्ष में हिम्मत, बहादुरी तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति बारम्बार मुसीबतों का शिकार बनता रहता है, परन्तु अपने साहस एवं धैर्य के बल पर उन सब पर विजय भी पाता रहता है।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : सप्तमभाव : राहु

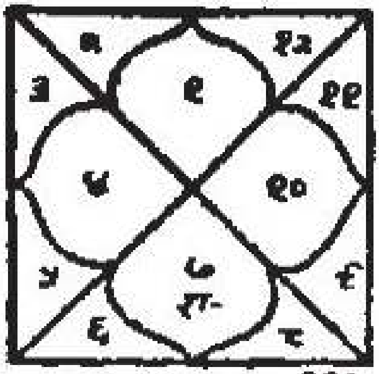

३०६

सातवेंभाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष मे चिन्ता एवं कष्टों का शिकार होता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर उन कठिनाइयों का निराकरण करता है। व्यक्ति के पारिवारिक-जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती है तथा जैसे-तैसे ही निर्वाह हो पाता है।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : राहु

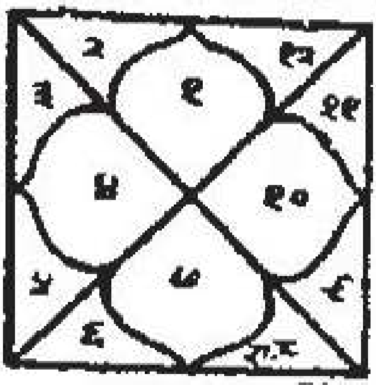

३०७

आठवेंभाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का शिकार होना पड़ता है। एक के बाद दूसरी मुसीबतें घेरे रहती है तथा पुरातत्त्व विषयक हानि भी उठानी पड़ती है। वह गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है, फिर भी उसकी चिन्ताओं एवं परेशानियों का अन्त नहीं हो पाता।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : राहु

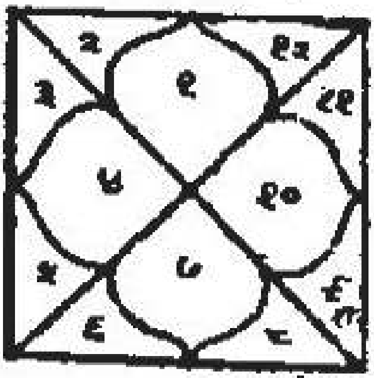

३०८

नवेंभाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहती हैं। धर्म पालन में भी श्रद्धा नहीं रहती। उसे बारम्बार अपयश, कष्ट, निराशा एवं असम्मान का सामना करना पड़ता है तथा अत्यधिक दुःख उठाते रहने के बावजूद भी बहुत कम सफलतायें मिल पाती हैं।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : दशमभाव : राहु

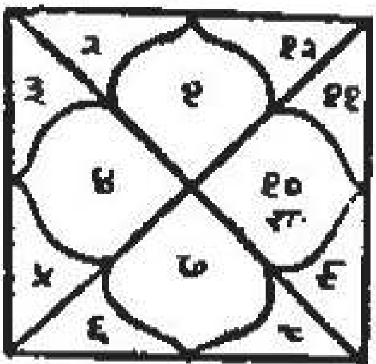

२०९

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा नौकरी, व्यवसाय एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी बहुत संकट आते हैं। ऐसे जातक को भाग्योन्नति में बहुत कम सफलता मिलती है तथा अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : एकादशभाव : राहु

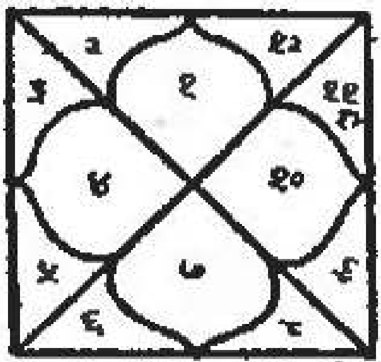

२१०

ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है, परन्तु उसके लिए उसे कठोर परिश्रम भी करना पड़ता है। कभी-कभी लाभ के स्थान पर हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक मितव्ययी, परिश्रमी, धनी तथा स्वार्थी होता है।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : राहु

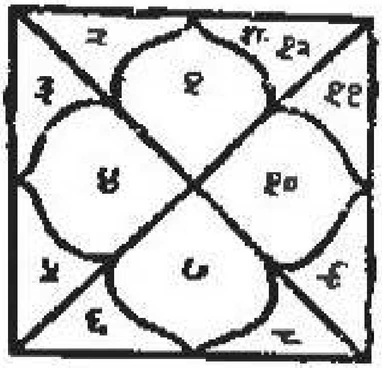

२११

बारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च की अधिकता के कारण बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्ट मिलता है। बीच-बीच में कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना तथा ठाठ-बाट से रहना—ये दोनों बातें भी साथ-साथ चलती हैं, परन्तु ऋण एवं व्यय के बोझ से मुक्ति नहीं मिल पाती।

'मेष' लग्न में 'केतु'

'मेष' लग्न की कुंडली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फल

मेषलग्न : प्रथमभाव : केतु

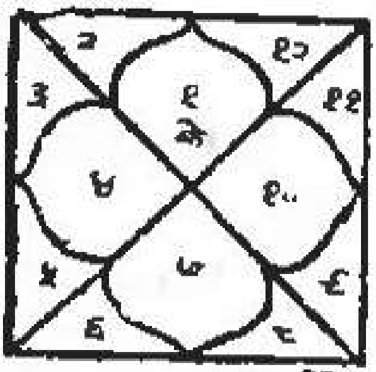

२१२

पहलेभाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कष्ट, मानसिक-चिन्तायें तथा अन्य प्रकार की परेशानियों का शिकार बना रहता है। उसके शरीर में कहीं चोट भी लगती है तथा सौन्दर्य में भी कमी आ जाती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती, परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है, परन्तु फिर भी अनेक त्रुटियों का शिकार बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : केतु

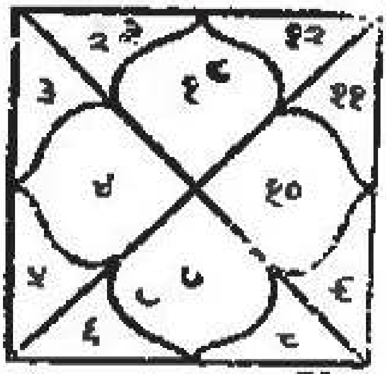

२९३

दूसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कष्ट, चिन्ता, धन, की कमी, कौटुम्बिक परेशानी एवं झगड़ों का शिकार बना रहता है, परन्तु अपने युक्ति-बल के आर्थिक स्थिति में थोड़ा-बहुत सुधार कर लेता है। भीतर से चिन्तित, निर्धन तथा दुःखी रहने पर भी वह अपनी असलियत को प्रकट नहीं होने देता, फलतः लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : केतु

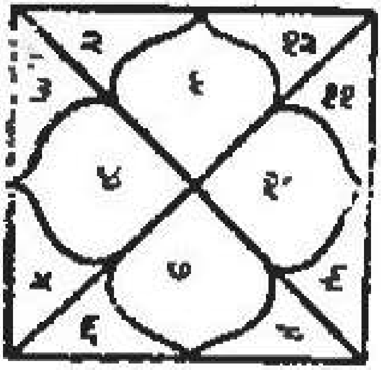

२९४

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के पक्ष में कमजोरी आती है तथा वह भीरु स्वभाव का होता है। गुप्त-युक्तियों के आश्रम से स्वार्थ साधन करना ही उसका उद्देश्य होता है, परन्तु अत्यधिक परिश्रम करने पर भी उसे सफलता बहुत कम ही मिल पाती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : केतु

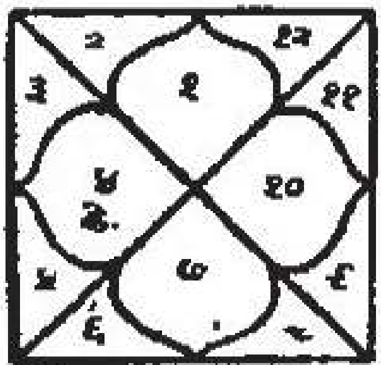

२९५

चौथे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में बहुत कमी रहती है तथा कुटुम्ब के विषय में भी अशान्तिबनी रहती है। चन्द्रमा की राशि पर केतु के होने कारण जातक का मनोबल बना रहता है, अतः उसी के बल पर वह अपने संकट का समय निकालता है। ऐसा जातक अपना देश छोड़ कर विदेश में भी जा सकता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : केतु

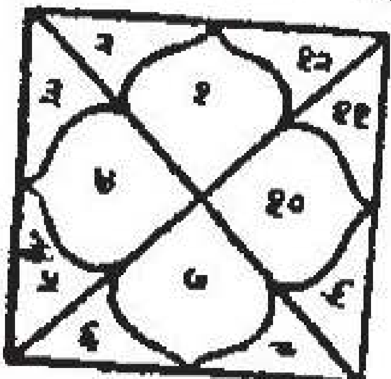

२९६

पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयां आती हैं। स्मरणशक्ति निर्बल होने के कारण वह अधिक विद्या प्राप्त नहीं कर पाता तथा सन्तानपक्ष से भी दुःखी रहता है। इस ग्रह स्थिति का जातक स्वभाव से उग्र तथा कठोर वचन बोलने वाला होता है। अत्यन्त परिश्रम करने पर भी उसे कम सफलता ही मिलती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : केतु

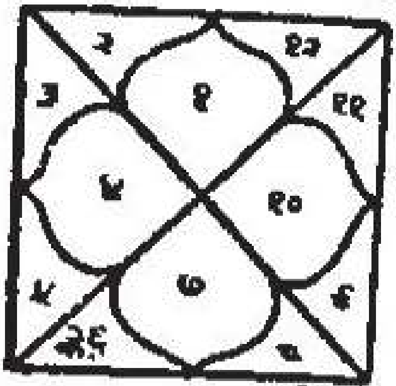

२२७

छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर विजयी बना रहता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा विवेकी होता है, परन्तु मन के भीतर कुछ कमजोरी भी छिपी रहती है। उसे ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति विवेकी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : केतु

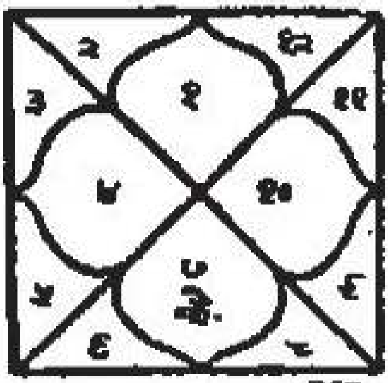

२२८

सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पारिवारिक-गुत्थियों को सुलझाने में अनेक युक्तियों से काम लेना पड़ता है। अपनी गुप्त-युक्तियों द्वारा उसे व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमियों से साथ सफलता मिलती रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : केतु

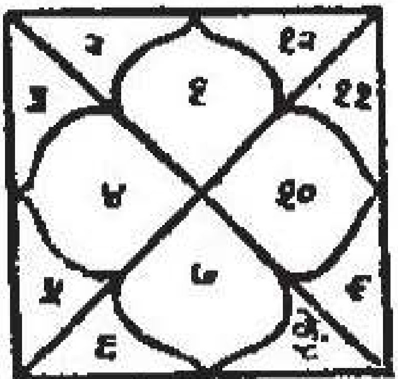

२२९

आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर जातक अपनी कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पाता है, परन्तु कष्टों का अन्त नहीं होता। उसके शरीर में भी कोई-न-कोई रोग बना ही रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : नवम भाव : केतु

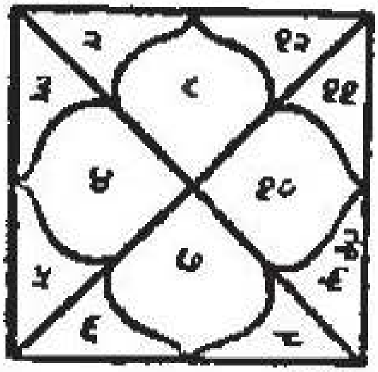

२२०

नवें भाव में शुभ ग्रह गुरु की राशि में स्थित उच्च के प्रभाव से जातक भाग्यवान, धर्मात्मा तथा धनी होता है, परन्तु उसके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं तथा उसे अनेक प्रकार के संकटों एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। कुल मिला कर ऐसा जातक संघर्षपूर्ण सुखी एवं धार्मिक जीवन व्यतीत करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : केतु

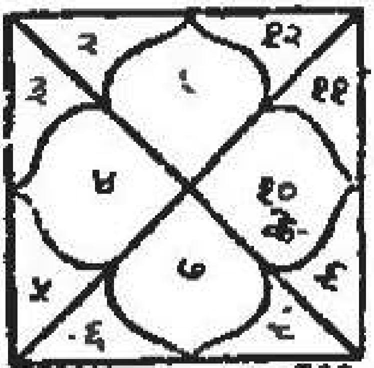

२२१

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है। उसे अपने व्यवसाय में अनेक बार परिवर्तन करने की आवश्यकता भी पड़ती है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बल पर वह मान-प्रतिष्ठा तथा सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : केतु

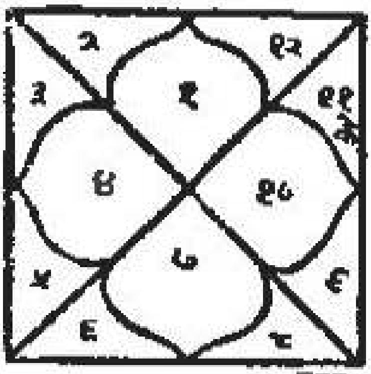

२२२

ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर अधिक मुनाफा कमाता है। परन्तु उसे अपनी आय के साधनों में अनेक बार परिवर्तन करने के साथ ही कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता भी पड़ती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : केतु

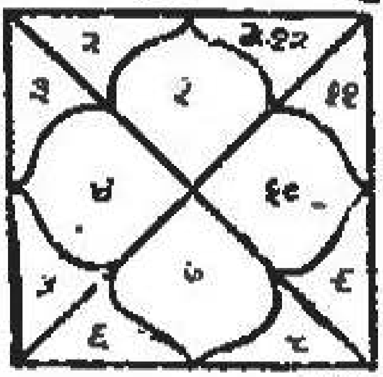

२२३

बारहवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थान के सम्बन्धों में कष्ट प्राप्त होता है तथा खर्च सम्बन्धी परेशानियां भी अधिक उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं। गुरु के शुभ ग्रह होने के कारण कभी-कभी अल्प लाभ भी होता है तथा अच्छे कामों में ही व्यय होता है।